ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2015; 1(7): 832-834
www.allresearchjournal.com
Received: 27-04-2015
Accepted: 29-05-2015

डॉ० दर्शन पाण्डेय
सहायक प्रोफेसर, शिवाजी कॉलेज
दिल्ली विश्वविद्यालय

Correspondence
डॉ० दर्शन पाण्डेय
सहायक प्रोफेसर, शिवाजी कॉलेज
दिल्ली विश्वविद्यालय

समकालीन महिला कहानीकारों की कहानियों में स्त्री

डॉ० दर्शन पाण्डेय

समकालीन भारतीय परिदृश्य में स्त्री-विमर्श जैसा विषय तमाम बहसों एवं चर्चाओं के केंद्र में रहने लगा है। स्त्री के इतिहास, वर्तमान और भविष्य आदि पर एक व्यापक चर्चा भी होती है। इस संदर्भ में यह उल्लेखनीय है कि स्त्री-सुधार तथा स्त्री-आंदोलन के अंतर्गत उसकी दशा को उन्नतशील बनाने का जो भी उपक्रम हुआ वह कहाँ तक सटीक एवं सार्थक है? क्या उसकी दिशा ठीक रही ? क्या वर्तमान में स्त्री की जो दशा है वह संतोषजनक है? ऐसे तमाम प्रश्न भी स्त्री-विमर्श का हिस्सा बन रहे हैं। वैसे वर्तमान समय में पुरुष समाज की मानसिकता एवं वस्तुस्थिति को दृष्टि में रखकर विचार करें तो अब हमें नारी को लेकर एक परिवर्तित चिंतन-दृष्टि अवश्य प्राप्त होती है, यही कारण है कि उसका प्रतिफलन हिन्दी साहित्य की विभिन्न विधाओं में भी दृष्टिगत होने लगा है।

स्त्री क्या है? कौन है? जैसे प्रश्न सहज ही मन में उद्भुत होते हैं। सकारात्मक दृष्टि से कहीं स्त्री को 'जननी' एवं 'देवी' स्वरूप माना गया तो कहीं उसे अधोपतन का कारण भी घोषित किया गया। ऐसे में आज की भारतीय स्त्री विविध रूपों में समाज और साहित्य में अपनी पहचान के लिए संघर्षरत नज़र आती है। नारी रूप, रस, गंध, रंग से परिपूर्ण ईश्वर की अद्भुत कृति है, जो परिवार एवं समाज में अनेकों रूप से अपना योगदान प्रकृति के समान करती है। वह समाज की दिशा निर्देशित भी कर सकती है और आवश्यकता पड़ने पर विपरीत परिस्थितियों से लड़ भी सकती है। वैदिक युग से लेकर वर्तमान समय तक नारी के प्रति समाज का दृष्टिकोण निरंतर परिवर्तित होता रहा है। वैदिक युग में स्त्री और पुरुष को बराबरी का अधिकार प्राप्त था, उसे शस्त्र और शास्त्र दोनों की शिक्षा दी जाती थी। जिसके प्रमाण हमें रामायण और महाभारत जैसे ग्रंथों में भी दृष्टिगत होते हैं। इस समय संतान पिता के नाम के साथ-साथ माता के नाम से भी जानी जाती थी, किन्तु धीरे-धीरे युग तथा परिस्थितियों में आए बदलाव के कारण नारी की स्थिति में आमूलचूल परिवर्तन कर दिया। हिन्दी साहित्य पर विहंगम दृष्टि डालने से यह बात सत्य सिद्ध हो जाती है कि मध्य काल में स्त्री को केवल 'वस्तु' या 'भोग्या' रूप में ही देखा गया। स्त्री को राजा- महाराजाओं को अपने राज्य की सीमाओं को बढ़ाने और युद्ध रोकने का माध्यम बनाया गया। भक्तिकालीन साहित्य में नारी की स्थिति का बड़ा ही मार्मिक चित्रण मिलता है। भक्ति काल में एक ओर जहाँ पूरा समाज भक्ति की गंगा में गोते लगा रहा था, वहीं नारी को भक्ति और ईश्वर प्राप्ति के मार्ग की बाधा समझा गया, उसे माया, ठगिनी, बंधन जैसे उपमानों से अभिहित किया गया। रीतिकाल में आकर स्त्री भोग-विलास का साधन बन कर रह गई, ऐसे में उसकी अपनी पहचान और अस्मिता का प्रश्न ही नहीं उठता था। आधुनिक काल में समाज और साहित्य संक्रांति काल के दौर से गुजर रहा था, समाज में भी परिवर्तन और नए विचारों का उदय हो रहा था। विभिन्न महापुरुषों द्वारा कई तरह के सामाजिक सुधार के कार्य हो रहे थे। ऐसे में नारी की दयनीय एवं शोचनीय स्थिति को लेकर ही सुधार हुआ। इसी का परिणाम था कि आधुनिक युग में नारी घर की चारदीवारी से बाहर आई और देश में चल रहे स्वतंत्रता आंदोलनों में भी अहम भूमिका अदा की। आधुनिक युग में नारी को शिक्षा का अधिकार प्राप्त हुआ, समाज के स्वस्थ विकास के लिए यह महसूस किया जाने लगा कि स्त्री का शिक्षित होना अनिवार्य है, किन्तु वस्तुस्थिति पूर्णतः संतोषजनक नहीं है। जबकि आज पूर्ण रूप से पुरुष-वर्ग शिक्षित नहीं हो पाया है तो स्त्री के बारे में पूर्ण साक्षरता की बात करना ही बेमानी है। शहरी स्त्री के बरक्स ग्रामीण और सुदूर क्षेत्रों में रहने वाली स्त्रियाँ आज भी अशिक्षित तथा पुरुषों द्वारा शोषित एवं पीड़ित हैं। समकालीन संदर्भों में जब हम महिला सशक्तिकरण की बात करते हैं तो यह भूल जाते हैं कि स्त्री स्वयं में ही शक्ति का पर्याय है, केवल पुरुष-समाज को अपनी सोच एवं मानसिकता में बदलाव की आवश्यकता है। साहित्य समाज का प्रतिबिंब होता है, इसलिए विभिन्न साहित्य विधाओं में स्त्री-समस्याओं और उनके प्रति होने वाले अत्याचारों उनकी भावनाओं, संवेदनाओं, इच्छाओं आदि को पर्याप्त स्थान दिया गया।

समकालीन हिंदी कथा-साहित्य में स्त्री-चिंतन को लेकर बहुल रचनाएँ मिलती हैं, हिंदी कहानीकारों में स्त्री से जुड़ी प्रत्येक समस्याओं एवं संवेदनाओं को स्थान दिया। प्रेमचंद युग से लेकर अब तक कहानी की संवेदना में स्त्री सदैव विद्यमान रही है, केवल उसकी सामाजिक पृष्ठभूमि बदलती रही। आज महिला कहानीकारों के सक्रिय रूप से

लेखन में भाग लेने से स्त्री-चिंतन को नई दिशा मिली है, महिला लेखिकाओं ने न केवल महिला शोषण के विरुद्ध आवाज उठाई, बल्कि उन्हें एक आत्मसम्मान पूर्ण दृष्टि भी प्रदान की है।

स्त्री अस्मिता के संबंध में निर्मला जैन ने कहा है कि " बिना पुरुष के सहयोग से स्त्री की पहचान नहीं बदल सकती। स्त्री को मुकम्मल होने के लिए पुरूष की मदद लेनी ही पड़ेगी। सच्चे अर्थों में नारी अस्मिता तभी आकार लेगी जब पुरुष स्त्री के पक्ष में खड़ा होने की बात करें।..... जब तक नारी में अपने फैसले करने का हक़ लेने का विचार नहीं आएगा तब तक वह अपने को स्वतंत्र मानने की अधिकारिणी कहां है। अब समय नहीं रहा जब स्त्री बच्चे पैदा करने के अलावा संगीत और सुई के सहारे घर की लक्ष्मी बनकर क़ैद रहे। उसे अपने पैरों पर खड़ा होना होगा और अच्छा होगा कि पुरुष मानसिकता का समाज उसको सहयोग प्रदान करे।" [1] स्त्री स्वत्व की पहचान चाहती है, वह किसी भी पारिवारिक संबंध के विरुद्ध नहीं है। न ही वह इन बंधनों से स्वयं अलग करना चाहती है उसकी लड़ाई समाज के अत्याचार तथा शोषण के विरुद्ध है, उसकी लड़ाई पुरुष के पुरुषवादी चिंतन से है, उसकी लड़ाई पुरुष के उस अहं से है जो उसे न इंसान बनने देता है और उसकी इच्छाओं उसके स्वाभिमान को निरंतर ठेस पहुंचाता है। स्त्री का विरोध पुरुष की उस मानसिकता से है जो उसे केवल भोग की वस्तु समझता है। आज स्त्री ने अपने बलबूते पर कुछ पहचान तो अवश्य बनाई है, जिसकी अभिव्यक्ति स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानियों में भी मिलती है।

उषा प्रियंवदा की कहानियों में एक ओर जहाँ परम्पराशील स्त्री पात्र सामाजिक परंपराओं और रूढ़ियों से जूझती नज़र आती हैं, वहीं दूसरी ओर पढ़ी लिखी नारी भी इस सामाजिक रूढ़िवादिता से स्वयं को अलग नहीं कर पाती है। 'अकेली राह' कहानी की पात्र गौरी का एक लड़के से प्रेम संबंध है, उसकी माँ को यह संबंध स्वीकार नहीं है जिस कारण उसकी मां उसे भला बुरा सुनाती है। माँ का यह बर्ताव गौरी को बुरा लगता है। अपने जीवन में वह किसी का हस्तक्षेप नहीं चाहती, वह अपने अनुसार जीवन जीने का निर्णय लेती है और संघर्षपूर्ण जीवन व्यतीत करती है, 'गौरी ने ना तो आत्महत्या की, न ही उसे क्षय ही हुआ। पहले की तरह काम में व्यस्त रहती।" [2] उषा प्रियंवदा की 'मान और हठ' कहानी पुरुष की पुरुषवादी मानसिकता के खिलाफ नारी विद्रोह की कथा है, जिसमें अमृता का पति जो बहुत अमीर है, वह अमृता का तिरस्कार करता है और फिर वह सोचता है कि वह पुरुष है इसलिए वह कुछ भी कर सकता है, वह स्त्री है वह रोकर अंततः मेरे पैरों में ही गिरकर क्षमा मांगेगी, वह कहता है- "झुकेगी, तो अमृता- वह नारी है, पत्नी है, मैं पति हूं।" [3] इस एक संवाद से ही पुरुष की अहंवादी मानसिकता उभर कर आती है। एक अन्य कहानी 'जिंदगी और गुलाब के फूल' में आधुनिक स्त्री द्वारा जब पुरुष के वर्चस्व को ठेस पहुंचती है तो वह किस प्रकार छटपटाता है, यह छटपटाहट इस कहानी के पात्र में दिखाई पड़ती है।

ज्ञान के प्रसार तथा अपने अधिकारों के प्रति चेतना जागृति के बाद आज स्त्री अपनी अस्मिता के प्रश्न को लेकर सजग एवं जागरूक हो चुकी है। यहाँ महादेवी वर्मा का कथन अवलोकनीय है-" केवल स्त्री के दृष्टिकोण से ही नहीं वरन हमारे सामूहिक विकास के लिए भी यह आवश्यक होता जा रहा है कि स्त्री घर की सीमा के बाहर भी अपना विशेष कार्य क्षेत्र चुनने को स्वतंत्र हो। गृह की स्थिति भी तभी तक निश्चित है जब तक हम गृहणी की स्थिति को ठीक-ठाक समझकर उससे सहानुभूति रख सकते हैं और समाज का वातावरण भी तभी तक सामंजस्यपूर्ण है जब तक स्त्री तथा पुरुष के कर्तव्यों में सामंजस्य है।" [4] लेकिन यथास्थिति कुछ और ही है, पत्नी के परंपरावादी स्वरूप को लेकर स्त्री आज सचेत है। वह पति को अपने स्वास्थ से परिचित कराती है। कहानीकार नमिता सिंह की कहानी 'या देवी सर्वभूतेषु' में स्त्री की अस्मिता का एक नया रूप देखने को मिलता है। कहानी की नायिका अपने स्वाभिमान के लिए पुरानी रूढ़ियों और संस्कारों को नकार देती है, वह अपने पति से अलग होकर अपनी नई पहचान बनाती है।

मैत्रेयी पुष्पा की कहानियों में उनके नारी पात्र स्वयं के मार्ग को खुद ही चुनते हैं। 'बहेलिये' कहानी की पात्र गिरजा बचपन से अन्याय और अत्याचार का सामना करती है, उसका अपने पिता से अधिक उम्र के व्यक्ति से विवाह होना और जल्दी ही विधवा हो जाना, यद्यपि वह सबकुछ सह लेती है, लेकिन गांव में एक लड़की के साथ हुए अत्याचार को वह साहस और दिलेरी से सामना करती है। मैत्रेयी पुष्पा ने अपनी कहानियों के माध्यम से लड़का और लड़की के भेद को समाप्त करने के लिए समाज को प्रेरित किया है। उनकी एक अन्य कहानी 'बेटी' की पात्र मुन्नी अपनी मां द्वारा किए जा रहे बेटा-बेटी के भेदभाव का विरोध करती है, वह कहती है- "अम्मा, तुम जो मेरे साथ कर रही हो, वह अच्छा नहीं कर रही, तुम पाँच-पाँच लड़कों को पढ़ा सकती हो, लेकिन मेरे लिए तुम्हारे घर में अकाल है, मेरी किताब कॉपी के पैसे तुम्हें भारी हैं।" [5] ऐसे सभी स्त्री पात्र समाज को प्रेरणा देती प्रतीत होती हैं।

मृदुला गर्ग ने अपनी कहानियों के माध्यम से स्त्री पर होने वाले अत्याचारों का खुलकर विरोध किया है, जिनमें 'उसकी कराह', 'अवकाश', 'तुक' जैसी कहानियाँ प्रमुख हैं। मृदुला गर्ग ने अपनी कहानियों में महिला के आत्मनिर्भरता पूर्ण जीवन को साहस के साथ जीना और प्रत्येक चुनौती के लिए स्वयं को तैयार रखना जैसी विशेषताएं मिलती हैं। मृदुला गर्ग ने 'मेरा' कहानी के द्वारा आज के परिवार में नौकरी-पेशा स्त्री-पुरुष के मध्य बच्चे के जन्म को लेकर उत्पन्न तनाव को चित्रित किया है। पति द्वारा पत्नी पर भ्रूण-हत्या या गर्भपात का दबाव डाला जाता है, गर्भपात से पहले अस्पताल में मीता को लगता है कि उसका अपना निर्णय होना चाहिए, वह कहती है-' मेरा मामला है तो एबोर्शन नहीं कराती। उसके अंदर का मातृत्व विजयी होता है और अपने पति और माँ के अमानवीय व्यवहार के बावजूद वह अपने स्वयं के निर्णय पर अडिग रहती है।' [6] इस प्रकार इसमें एक व्यक्ति के खोये निजत्व की कहानी है। ऐसी कई कहानियाँ लिखी गईं जिनमें स्त्री नौकरीपेशा होने के कारण तमाम तरह के दबाव को झेलती है, इस कारण उसे कई तह के समझौते करे पड़ते हैं। कहानीकार राजी सेठ की कहानियों में स्त्री केवल विवाह को ही अपने जीवन का लक्ष्य ना मानकर अपनी महत्वाकांक्षाओं को महत्व देती है। राजी सेठ के स्त्री पात्र इस मनोभाव को लेकर आते हैं कि वह पुरुष को उनकी संपूर्ण महत्वाकांक्षाओं के साथ स्वीकार करती हैं तो वे क्यों नहीं? नमिता सिंह ने कामकाजी महिलाओं की समस्याओं को उठाया है, जो अपना सर्वस्व समर्पित करने के बाद भी परिवार को संतुष्ट नहीं कर पाती। 'फिर हार गई वह' इसी संवेदना पर आधारित कहानी है। ऐसी ही भावभूमि कुछ मृदुला गर्ग ने अपनी कहानी में लिखी है जो आदर्श पत्नी, आदर्श मां बनने के का प्रयास करती है। 'चक्करघिन्नी' कहानी में विनीता नौकरी न कर अपने पति और बच्चों की भरपूर सेवा करती है, उनके लिए तरह-तरह के पकवान बनाती है, पति की प्रत्येक बात को मानती है, पति और बच्चों के कहने पर वह नौकरी भी करती है। विनीता के माध्यम से लेखिका ने समाज की बदलती वैचारिकी को प्रस्तुत किया है। कामकाजी स्त्री भी आदर्श पत्नी, आदर्श मां बन सकती है। परंतु इस आदर्श भूमि के मानदंड प्रत्येक घर-परिवार के अलग-अलग हो सकते हैं।

चित्रा मुद्गल ने अपनी कहानियों के माध्यम से कामकाजी और निम्न वर्ग की समस्याओं को उकेरा है। 'प्रमोशन' कहानी की नायिका ललिता नौकरी में मिली तरक़्क़ी के धन्यवाद ज्ञापन के लिए अपने बॉस को घर पर आमंत्रित करना चाहती है तो उसका पति सुभाष उसकी काबिलियत पर विश्वास न करके उसके चरित्र पर शक करता है, उसे लगता है कि बॉस ने प्रमोशन ललिता को अपने वश में करने के लिए दिया है। वास्तव में आज पुरुष की इसी सोच को बदलने की आवश्यकता है। चित्रा मुद्गल की एक अन्य कहानी 'शून्य' में ऐसी नारी का चित्र उकेरा गया है, जो अपने पति से तलाक़ लेती है तथा अपने बच्चे को उसके पिता के पास ही छोड़ देती है। वह चाहती है कि पुरुष को भी अपनी जिम्मेदारियों का एहसास हो, वह बच्चे को पत्नी के साथ भेजकर अपने कर्तव्य से मुक्त नहीं हो सकता। 'त्रिशंकु', 'पाली का आदमी' कहानियों में स्त्री विद्रोह के स्वर में चित्रित की गई है। नासिरा शर्मा ने अपनी कहानियों के माध्यम से स्त्री पीड़ा और उसकी अस्मिता से जुड़े प्रश्नों को उभारा है, उनकी कहानी 'पत्थर गली', 'संगसार', 'सबीना के चालीस चोर' मन्नू भंडारी नारी अस्मिता को व्यक्त करने वाली बड़ी सशक्त कहानीकार हैं, उनकी कहानियों में नारी अपने अधिकारों के लिए आवाज उठाती है। उनकी एक कहानी 'ईसा के घर इंसान' के माध्यम से उन्होंने स्त्री अस्मिता के कई पहलुओं पर चर्चा की है। 'त्रिशंकु' कहानी में स्त्री के आधुनिक रूप का चित्रण मिलता है, जहाँ एक मां अपने मातृत्त्व को भूलकर अपनी पुत्री को स्वतंत्र छोड़ देना चाहती है। मन्नू भंडारी की कहानियों में नारी पात्र अपने बदलते तेवर को बड़ी ही साहस के साथ प्रस्तुत करते हैं। मंजुल भगत की कहानियों में नारी पर किए जा रहे अत्याचारों को स्वर दिया गया है, आज भी स्त्रियों पर अत्याचार और शोषण बदस्तूर जारी है,

उसमें कोई बदलाव नहीं आया है। उनकी प्रमुख कहानियों में 'करवट दर करवट', 'अहसास', 'शुभ-अशुभ', 'कसर' आदि।

मालती जोशी की कहानियाँ मध्यवर्गीय नारी के प्रश्नों को उठाती हैं, जहाँ स्त्री सम्पूर्ण परिवार जिसमें पति, बच्चे आदि को एकजुट रखने चक्कर में ही पिसती चली जाती है। उनकी कहानी 'मन धूँआं धूँआं' में नारी-मन का बड़ा मार्मिक चित्रण मिलता है। 'पराजय' कहानी में स्त्री के मां के रूप को विश्लेषित किया गया है। कृष्णा अग्निहोत्री की कहानियों में नारी अपने परंपरागत और रूढ़िगत समाज से मुक्ति चाहती है। चातकी, खुली राह पर बंद दरवाजे, मंगली आदि कहानियाँ नारी- मुक्ति तथा उनकी पारंपरिक स्थिति में परिवर्तन की ओर कैसे बढ़ा जाये इस पर विचार करने को प्रेरित करती हैं। कुसुम अंसल की कहानियां में नारी मनोविज्ञान के स्वर को उभारा गया है, जहाँ रूढ़ियों तथा परम्पराओं से मुक्ति की चाह है, परंतु इसके लिए सोच-समझकर आगे बढ़ने की बात करती हैं। 'स्पीड ब्रेकर ऐसी ही कहानी है, जिसमें कुसुम अंसल कहती हैं,-' कभी- कभी लगता है, इन सब हस्ताक्षरों के बीच या अब तक के रास्ते पर चलने के प्रयास में जो भी कष्ट मिले हैं, उनका बदला ले डालें..... पर किससे? परिस्थितियों से? या उन मजबूरीयों से, जो हम पर लदती गईं? ख़ैर अब ज़िंदगी स्पीड ब्रेकर के पास आ रुकी है, धीरे चले तो झटका नहीं लगेगा और यह रास्ता शायद मंजिल से जा मिले।' [7] स्पष्ट है कि स्त्री पूरे विवेक के साथ आगे बढ़ना चाहती है, जहाँ कोई जल्दबाज़ी नहीं।

समग्रतः समकालीन युग में बदलते समाज और परिवेश को ग्रहण करते हुए स्त्री से जुड़े प्रत्येक प्रसंग को कहानीकारों ने उठाया है, लेकिन जहाँ तक समाज में नारी की स्थिति और दशा का प्रश्न है उसमें कुछ खास बदलाव नहीं आया, पढ़ी-लिखी कामकाजी स्त्री हो या अनपढ़ घरेलू महिला, सभी कहीं ना कहीं अत्याचार और शोषण का शिकार होती हैं। कुछ साहस कर अपने स्वाभिमान की रक्षा में प्रश्न उठाती हैं, संघर्ष करती हैं, परंतु कुछ सामाजिक दबाव और अपने दृढ़ निश्चय की कमी के कारण चुप रह जाती हैं। प्रश्न है कि पुरुष की मानसिकता में अब तक बदलाव क्यों नहीं आया? स्त्री-पुरुष गाड़ी के दो पहियों के समान है, एक के बिना दूसरे की धुरी नहीं है। पुरुष क्यों नहीं अपने अहं को त्याग कर स्त्री के विकास में मजबूत स्तम्भ की तरह उसका साथ देता? स्त्री-पुरुष दोनों एक दूसरे पर निर्भर अपनी कमजोरियों के कारण नहीं अपने मजबूत इरादों, मजबूत चरित्र के कारण हों। समाज के विकास के लिए आवश्यक है समाज की परिवार नामक संस्था भी मूल्यों के समन्वय के साथ विकास करें, तभी एक स्वस्थ, संतुलित एवं सामंजस्यपूर्ण समाज का निर्माण संभव है।

संदर्भ

1. हंस, जनवरी 2002, पृष्ठ 82- 83
2. उषा प्रियंवदा -संपूर्ण कहानियाँ, पृष्ठ- 111
3. उषा प्रियंवदा -संपूर्ण कहानियां पृष्ठ 58
4. महादेवी वर्मा- श्रृंखला की कड़ियां, पृष्ठ 55
5. मैत्रेयी पुष्पा- ललमनियाँ तथा अन्य कहानियाँ, पृष्ठ 15
6. मृदुला गर्ग- देखो डैफ़ोडिल जल रहे हैं- पृष्ठ- 45
7. कुसुम अंसल- स्पीड ब्रेकर- पृष्ठ- 34